8. पाठ्य-पुस्तक विधि
(Text-Book Method)

यह विधि भी अति प्राचीन काल से प्रचलन में है। माध्यमिक विद्यालयों तथा विशेषकर जूनियर हाई स्कूलों में, जहाँ कि पाठ्य-पुस्तक में ही सम्पूर्ण पाठ्यक्रम उपलब्ध हो जाता है, अध्यापक इसी विधि के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन फिर भी अकेले इसी विधि का प्रयोग किया जाना उचित नहीं है। प्राचीन समय में अध्यापक पाठ्य-पुस्तक में से विद्यार्थियों को कुछ गृह-कार्य दे देता था और अगले दिन विद्यार्थी याद की हुई विषय-वस्तु को दुहराते थे। विद्यार्थियों की प्रगति को जानने के लिए अध्यापक प्रत्येक छात्र से प्रश्न पूछा करता था। जो छात्र पाठ याद करके नहीं सुनाता था उसे दण्ड मिलता था। उस समय शिक्षा का उद्देश्य पाठ्य-पुस्तकों से विषय को पढ़कर स्मरण करना तथा इसी तरीके से ज्ञान में वृद्धि करना था। पाठ्य-पुस्तकों से वैज्ञानिक तथ्यों को याद किया जाता था। विद्यार्थी भले ही तथ्यों का सिद्धान्तों से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाते थे, परन्तु तथ्यों को रटकर याद अवश्य कर लेते थे। यह कहना चाहिए कि प्राचीन काल में विषय ज्ञान का उद्देश्य पाठ्य-पुस्तकों को याद कर लेना बना लिया गया।

बहुत बाद में चलकर **हॉल क्वैस्ट** (Hall Quest) तथा अन्य विद्वानों ने लोगों को इस ओर सचेत किया कि पाठ्य-पुस्तक को एक अन्तिम उद्देश्य की भाँति न मानकर पाठन की एक सहायक सामग्री की भाँति माना जाना चाहिए। उनका कहना था कि विद्यार्थियों को इस प्रकार पढ़ाया जाना चाहिए ताकि वे पाठ्य-पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक जीवन की समस्याओं के हल करने के लिए प्रयोग कर सकें। आजकल पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

पाठ्य-पुस्तक विधि के भी कुछ गुण हैं तथा उसके कुछ दोष भी हैं।

गुण—(1) यदि पाठ्य-पुस्तकों तथा सहायक पुस्तकों को प्रदर्शन तथा प्रयोग द्वारा सीखे गये ज्ञान की पूर्ति के लिए उपयोग में लाया जाये तो उनका महत्त्व अधिक बढ़ जाता है।

(2) विद्यार्थी कक्षा में पढ़ी हुई वस्तुओं को घर में पाठ्य-पुस्तक की सहायता से दुहरा सकता है।

(3) विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तक से गृह कार्य दिया जा सकता है जिससे वे घर में कार्यरत रहते हैं। उनमें उत्तरदायित्व की भावना भी जाग्रत होती है क्योंकि वे गृह-कार्य को उचित समय पर घर से करके ले जाना अपना कर्त्तव्य समझने लगते हैं।

(4) पुस्तकों से जो गृह-कार्य दिया जाये यदि उसे समस्या हल करने के रूप में दिया जाये तो वह अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। इस प्रकार की समस्या के लिए वे अनेक सहायक पुस्तकों का अध्ययन करने की चेष्टा करते हैं और उन्हें समस्या हल करने में रुचि उत्पन्न होती है।

(5) विज्ञान-विषय में अनेक उप-विषय ऐसे होते हैं जो पाठ्य-पुस्तकों में संगठित रूप से लिखे होते हैं और विद्यार्थी उनको पढ़कर अच्छी तरह समझने लगता है।

(6) यदि पाठ्य-पुस्तक अच्छी प्रकार से लिखी गई हो और उसमें स्थान-स्थान पर उदाहरणों की सहायता से समझाया गया हो तो विद्यार्थी उनसे ज्ञान प्राप्त करने में रुचि लेते हैं। यदि पाठ्य-पुस्तक रुचिकर होती है तो विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है जिसका शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

दोष—(1) अनेक विद्यार्थियों में पाठ्य-पुस्तकों को रटकर याद कर लेने की प्रवृत्ति हो जाती है, इससे उनकी तर्क-शक्ति का विकास नहीं होने पाता। यदि पाठ्य-पुस्तक विधि का प्रयोग किया जाय तो अध्यापक को चाहिए कि विद्यार्थियों के पाठ याद करने के पश्चात् उनमें वाद-विवाद करवाये जिससे

यह ज्ञात हो जाय कि कौन विद्यार्थी पाठ को समझता है और कौन नहीं। वाद-विवाद से विद्यार्थी अपने सन्देहों तथा कमजोरियों को भी दूर कर लेंगे।

(2) कभी-कभी ऐसा भी होता है कि विद्यार्थी समझते हैं कि पाठ्य-वस्तु को पाठ्य-पुस्तक से पढ़ना है, इसलिए वे परीक्षा के कुछ दिन पूर्व उसे पढ़कर परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रयत्न करते हैं। वे दिन-प्रतिदिन कार्य लगन से नहीं करते बल्कि परीक्षा के कुछ दिन पूर्व से अध्ययन आरम्भ करते हैं। इस प्रवृत्ति से शिक्षा का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। विद्यार्थी बिना समझे-बूझे पाठ को याद कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है। उनका मानसिक विकास पूर्ण रूप से नहीं होने पाता।

(3) यदि पाठ्य-पुस्तक उचित प्रकार से नहीं लिखी गई हो तब उससे विद्यार्थियों में पाठ्य-पुस्तकों के लिए अरुचि उत्पन्न हो जाती है और वे विषय-ज्ञान भी सही रूप से प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

अतः हमें चाहिए कि यदि हम आवश्यकतानुसार पाठ्य-पुस्तक विधि का प्रयोग करें तो पुस्तक रटकर याद कर लेना उद्देश्य न बनायें बल्कि उसे एक सहायक सामग्री की भाँति प्रयोग करें। विद्यार्थियों को केवल एक पाठ्य-पुस्तक न पढ़ायें, बल्कि उन्हें अन्य कई सहायक पुस्तकों को पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों द्वारा पाठ्य-पुस्तकों से ज्ञान की परीक्षा के लिए नित्य-प्रति उन्हें वाद-विवाद के लिए प्रोत्साहित करें जिससे उनकी कठिनाइयों तथा कमजोरियों का पता लग सके। पाठ्य-पुस्तकों को प्रदर्शन तथा प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान की पूर्ति के लिए प्रयोग करें तथा केवल उचित प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। ऐसी पाठ्य-पुस्तकों को विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए छाँटना चाहिए जिनमें कुछ समस्याओं को प्रस्तुत किया गया हो तथा उनके हल करने के लिए कुछ सुझाव भी दिये गये हों।

9. दत्तकार्य विधि

physical-Sc Pedagogy

(Assignment Method)

इस विधि में वर्ष भर के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे खण्डों विभक्त कर लिया जाता है जिन्हें बालक एक निश्चित समय में पूरा करने का प्रयास करते हैं। ऐसे प्रत्येक खण्ड को दत्तकार्य या अधिन्यास (Assignment) कहते हैं। प्रत्येक दत्तकार्य में किसी एक प्रकरण का अध्ययन अभीष्ट रहता है तथा उसकी सहायता के लिये उचित मार्ग प्रदर्शन का समावेश कर दिया जाता है। इस विधि का सबसे बड़ा लाभ 'शिक्षा का व्यक्तिकरण' है। यूँ तो कुछ न कुछ मात्रा में स्वयं निर्भर कार्यविधि सदा से चली आई है लेकिन इस विधि के आविर्भाव ने उसे कुछ विधिवत् रूप प्रदान किया है। यह विधि छात्रों को अधिक से अधिक आत्म-निर्भरता के अवसर प्रदान करती है।

इस विधि में जब तक छात्र अपना एक अधिन्यास ठीक प्रकार से पूरा नहीं कर लेता तब तक उसे दूसरा अधिन्यास नहीं दिया जाता। जो छात्र अपना एक अधिन्यास समाप्त कर लेते हैं वे दूसरा अधिन्यास स्वतन्त्रतापूर्वक प्रारम्भ कर सकते हैं। विद्यार्थियों को अधिन्यास के साथ-साथ आवश्यक निर्देश भी दे दिये जाते हैं। आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थी शिक्षक से उचित परामर्श ले सकते हैं व सभी प्रकार के आवश्यक साज-सामान से युक्त प्रयोगशाला तथा पुस्तकालय का भी प्रयोग करते हैं।

इस विधि की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि लिखे गये दत्तकार्य उच्च श्रेणी के हों। एक से दत्तकार्य उपयोगी नहीं होते। शिक्षकों में उत्तम दत्तकार्य बनाने की योग्यता होनी चाहिये। उन्हें पाठ्य-वस्तु का गहरा ज्ञान होना चाहिये। उनकी प्रश्नावली पर किसी प्रकार का प्रश्नचिन्ह नहीं लगना चाहिये तथा मार्ग दर्शिका छात्रों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिये। साथ ही, छात्रों के कार्य की प्रगति का लेखा-जोखा रखने के लिये अध्यापक को एक प्रगति-चार्ट भी रखना चाहिये। इस चार्ट के आधार